

BUCEROS

EIACP Resource Partner on AVIAN ECOLOGY

Vol. 30, No. 3, 2025-26

Special Issue

Harbinger of the Monsoon The Lesser Florican

मानसून का अग्रदूत खरमोर



©BNHS 2025: All rights reserved. This publication may not be reproduced, in whole or in part, in any form – whether print, electronic, or any other medium – without prior written permission from the Bombay Natural History Society.

Bombay Natural History Society, Hornbill House, S.B. Singh Road, Mumbai – 400 001, Maharashtra, India.

Email: director@bnhs.org

Disclaimer: The map shown here is for illustrative purposes only. The Bombay Natural History Society makes no legal claims regarding boundaries or delineations. The map is based on the habitat of the Lesser Florican in India. Maps may vary regionally.

Maps: Prepared using ArcMap 10.8 software and ArcGIS Pro by Dr Sujit Narwade and Rushikesh Pawar

Design: Sanchi Shrivastav, Sachin Bishnoi

Concept: Dr Sujit Narwade

Design Tools: Canva (Design), OpenAI (For Illustrations).

Photographs in Report: Credited to respective photographers

We recommend acknowledging the support of the Rajasthan Biodiversity Board (RSBB) and SITA Inc. for the Lesser Florican Project.

Recommended citation :

Narwade, S.S., S. Shrivastav, S. Bishnoi, N. Bora, S. Purohit and R. Pawar (2025): *Dancer of the Monsoon: The Lesser Florican's Tale*, Published by Bombay Natural History Society. Pp- 40

© BNHS 2025: सभी अधिकार सुरक्षित हैं। बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी की पूर्व लिखित अनुमति के बिना इस प्रकाशन को किसी भी रूप में, चाहे वह प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक या किसी अन्य माध्यम में हो, पूरे या आंशिक रूप से पुनः प्रस्तुत नहीं किया जा सकता है।

बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी, हॉर्नबिल हाउस, एस.बी. सिंह रोड, मुंबई - 400 001, महाराष्ट्र, भारत।

ईमेल: director@bnhs.org

अस्वीकरण: यहाँ प्रदर्शित मानचित्र केवल उदाहरणार्थ प्रस्तुत किया गया है। बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी सीमा-रेखाओं या किसी भी प्रकार की अधिकारिक सीमाओं के संबंध में कोई कानूनी दावा नहीं करती। यह मानचित्र भारत में लेसर फ्लोरिकन के आवास पर आधारित है। क्षेत्र के अनुसार मानचित्रों में भिन्नता हो सकती है।

मानचित्र: डॉ. सुजित नरवडे और ऋषिकेश पवार द्वारा आर्कमैप 10.8 सॉफ्टवेयर और आर्कजीआईएस प्रो का उपयोग करके तैयार किया गया है।

डिज़ाइन: साँची श्रीवास्तव, सचिन बिश्रोई

परिकल्पना: डॉ. सुजित नरवडे

डिज़ाइन साधन: कॅनवा (डिज़ाइन), ओपनएआई (चित्रण के लिए)

रिपोर्ट में प्रस्तुत फोटोज क्रेडिट : संबंधित फ़ोटोग्राफ़रों को

हम खरमोर परियोजना के लिए उनके महत्वपूर्ण सहयोग के लिए राजस्थान जैव विविधता बोर्ड (आरएसबीबी) और सीता इंक. के प्रति हार्दिक आभार एवं सम्मान व्यक्त करने की अनुशंसा करते हैं।

अनुशंसित सहयोगकर्ता:

नरवडे, एस.एस., एस. श्रीवास्तव, एस. बिश्रोई, एन. बोरा, एस. पुरोहित और आर. पवार (2025): मानसून का अग्रदूत खरमोर, बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी द्वारा प्रकाशित। पृष्ठ. ४०



EIACP (Environmental Information, Awareness, Capacity Building and Livelihood Programme) is a network of subject-specific centres located in various institutions throughout India. The focal point of the 54 EIACP centres in India is at the Ministry of Environment, Forest and Climate Change, New Delhi, which further serves as the Regional Service Centre (RSC) for INFOTERRA, the global information network of the United Nations Environment Programme (UNEP) to cater to environment information needs in the South Asian sub-region. The primary objective of all EIACP centres is to collect, collate, store and disseminate environment-related information to various user groups, including researchers, policy planners, and decision makers.

The EIACP Resource Partner (formerly known as ENVIS) on Avian Ecology at the Bombay Natural History Society was set up in June 1996 to serve as a source of information on Avian Ecology.

Objectives of the EIACP Centre at BNHS

- 1) To establish and maintain database on Avian Ecology.
- 2) Publish and distribute BUCEROS and other informative products.
- 3) To upload database on Data Resource Centre by using internet and provide knowledge to the users.
- 4) Spread information on birds through doubt clearance service and organise workshops.
- 5) To conduct various certificate courses under Green Skill Development Programme (GSDP).
- 6) Conduct capacity building programmes approved by the Ministry of Environment, Forest and Climate Change (MoEF&CC).
- 7) Organize mass awareness campaigns and activities on Mission LiFE as per the direction of MoEF&CC

पर्यावरण सूचना, जागरूकता, क्षमता निर्माण और आजीविका कार्यक्रम (ईआईएसीपी) विशिष्ट-विषय संबंधित केंद्र के रूप में पूरे भारत के विभिन्न संस्थानों में स्थित है। भारत में वर्तमान में ५४ ईआईएसीपी जो की पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (MoEF&CC) द्वारा वित्त पोषित है। सभी पर्यावरण सूचना प्रणाली केंद्रों का प्राथमिक उद्देश्य है: पर्यावरण से संबंधित जानकारी एकत्र करना और विभिन्न उपयोगकर्ता समूह, जिसमें शोधकर्ता, नीति नियोजक और निर्णय लेने वाले लोगो तक भेजना। बॉम्बे नैचुरल हिस्ट्री सोसाईटी में ईआईएसीपी जून १९९६ में स्थापित किया गया था। पक्षी परिस्थितिकी पर बीएनएचएस - ईआईएसीपी केंद्र के उद्देश्य नीचे दिये गये है

- १) पक्षियों से संबंधित प्रकाशित साहित्य की ग्रंथ सूची बनाना
- २) BUCEROS समाचार पत्रिका को प्रकाशित और वितरित करना
- ३) बीएनएचएस - ईआईएसीपी की Data Resource Centre पर जानकारी उपलब्ध करवाना
- ४) पक्षियों से संबंधित प्रश्नों के उत्तर देना
- ५) हरित कौशल विकास कार्यक्रम (जीएसडीपी) प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम संचालित करना
- ६) पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (MoEF&CC) से मंजूर क्षमता निर्माण कार्यक्रम चलाना
- ७) MoEF&CC के निर्देशानुसार मिशन लाइफ पर जन जागरूकता अभियान और गतिविधियों का आयोजन करना



Environment Information, Awareness,
Capacity Building and Livelihood Programme
(EIACP) at BNHS

BUCEROS
EIACP Newsletter
Avian Ecology
Vol. 30, No. 3, 2025-26

EIACP TEAM AT THE BNHS

Project Coordinator
Dr. Sujit Narwade

Programme Officer
Nandkishor Dudhe

Information Officer
Natasha Girkar

IT Officer
Niraj Patel

Data Entry Operator
Yogesh Dhamnaskar

Design
Sanchi Shrivastav, Sachin Bishnoi

बीएनएचएस स्थित पर्यावरण सूचना, जागरूकता, क्षमता
निर्माण और आजीविका कार्यक्रम (ईआईएसीपी)

BUCEROS
ईआईएसीपी समाचार पत्रिका
पक्षी पारिस्थितिकी
खंड ३०, क्रमांक ३, २०२५-२६

बीएनएचएस-ईआईएसीपी कर्मचारी

परियोजना समन्वयक
डॉ. सुजित नरवडे

कार्यक्रम अधिकारी
नंदकिशोर दुधे

जानकारी अधिकारी
नताशा गिरकर

आईटी अधिकारी
नीरज पटेल

तथ्य दाखिला प्रचालक
योगेश धामणस्कर

रचना
साँची श्रीवास्तव, सचिन बिश्रोई



Harbinger of the Monsoon The Lesser Florican

Published by :
Bombay Natural History Society

Lesser Florican team

Principal head

Dr Sujit Narwade, PhD, Deputy Director, BNHS

Author Team

- Sharad Purohit, teacher, Jodhpur
- Dr. Neelkanth Bora, Assistant Director
- Rushikesh Pawar, Senior Project Fellow
- Sanchi Shrivastav, Junior Project Fellow
- Sachin Bishnoi, Community Engagement Officer

मानसून का दूत खरमोर

प्रकाशित द्वारा:
बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी

खरमोर दल

प्रधान प्रमुख

डॉ सुजित नरवडे, पीएचडी,
उप निदेशक, बीएनएचएस

टीम के लेखक सदस्य

- शरद पुरोहित, शिक्षक, जोधपुर
- डॉ. नीलकंठ बोड़ा, सहायक निदेशक
- ऋषिकेश पवार, वरिष्ठ परियोजना सहकारी
- साँची श्रीवास्तव, कनिष्ठ परियोजना सहकारी
- सचिन बिश्रोई, सामुदायिक सहभागिता अधिकारी





Table of Contents

• Preface.....	2
• A Unique Dancer of the Grasslands.....	4
• Come, Let Me Introduce You to My Family.....	5
• About my IUCN status.....	7
• Where Do I Live? – In The Lands of Windy Grass.....	8
• My Monsoon Dance – Sky Dancer of the Grasslands.....	9
• My Food – The Caterpillars and Insects You Dislike Are My Favourite Meal!.....	10
• Fascinating Facts About the Nest – From a Mother Kharmor’s Perspective.....	12
• Battling the Odds: What Threatens My Survival.....	13
• Why the Lesser Florican is Disappearing.....	14
• The Dangers I Face – "A Shrinking World".....	15
• The incidents that have recently happened with me.....	17
• Why Are Grasslands Important? – "Grasslands Are Natural Forests Too".....	20
• Where Is My Home?.....	22
• My home in Ajmer and Gujarat.....	23
• Conservation Heroes – "Hope in Human Hearts".....	26
• What you can do - You are a part of my story; you and I are not separate.....	27
• When people and nature join hands—Farmers, students, and forest guards come together to save the sky dancer!.....	28
• About Bombay Natural History Society (BNHS).....	29
• About the Project.....	30
• Government Collaboration and Institutional Support.....	31
• Kharmor Project Team.....	32

विषयसूची

• प्रस्तावना.....	२
• घास के मैदानों का एक अनोखा नर्तक।.....	४
• आइए, आपको मिलवाता हूँ अपने परिवार से।.....	५
• मेरी IUCN स्थिति के बारे में।.....	७
• मैं कहाँ रहता हूँ? - "हवादार घास के मैदानों में।.....	८
• मेरा मानसूनी नृत्य।.....	९
• मेरा भोजन- जिन लटो और कीड़ो से आप परेशान होते हैं वही मेरा पसंदीदा भोजन।.....	१०
• घोंसले की रोचक बातें - माँ खरमोर की जुबानी।.....	१२
• विपरीत परिस्थितियों से जंग: मेरी उत्तरजीविता के खतरे।.....	१३
• खरमोर की घटती संख्या के कारण।.....	१४
• मेरे जीवन में सबसे बड़ा खतरा "घटते सिकुड़ते घास के मैदान"।.....	१५
• फिलहाल मे घटी हुई मेरे साथ घटनाएँ।.....	१७
• घास के मैदान ही क्यों महत्वपूर्ण हैं - " घास के मैदान भी प्राकृतिक जंगल होते हैं "।.....	२०
• मेरे घर कहाँ-कहाँ है।.....	२२
• मेरा घर राजस्थान और गुजरात में।.....	२३
• संरक्षण नायक – "मानव हृदयों में आशा"।.....	२६
• आप क्या कर सकते हैं – "आप मेरी कहानी का हिस्सा है, आप और मैं अलग अलग नहीं हैं"।.....	२७
• सबको मिलकर चलना होगा - छात्र, किसान, वन रक्षक - बचायेंगे हमारा प्यारा खरमोर।.....	२८
• बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी (BNHS) के बारे में।.....	२९
• परियोजना के बारे में।.....	३०
• सरकारी सहयोग एवं संस्थागत समर्थन।.....	३१
• खरमोर संरक्षण दल।.....	३२

Director, Bombay Natural History Society (BNHS)

The Lesser Florican is a remarkable bird of India's grasslands, whose leaps and breeding display amaze us time and again. It's not just a species, but a symbol of the vitality and fragility of the landscapes it calls home. When it rises into the air, it gently reminds us how beautiful and vulnerable nature's celebration truly is.

BNHS has played a leading role in the conservation of this bird. Surveys of its distribution and ecology in the grasslands of Rajasthan and Madhya Pradesh have provided a strong scientific foundation for policymakers. Systematic research undertaken in collaboration with the Madhya Pradesh Forest Department has revealed the true status of this endangered species. In the Shokaliya landscape of Rajasthan, we worked to establish community reserves, so that local communities become active partners in this shared conservation journey.

Our efforts extend beyond research. BNHS has consistently advocated for placing grassland conservation on the national agenda. In this regard, in collaboration with the Rajasthan State Biodiversity Board (RSBB), initiatives have been undertaken to notify the Shokaliya landscape as a Biodiversity Heritage Site. This step will not only secure a safe habitat for the Lesser Florican but also ensure long-term protection for the entire grassland ecosystem.

The Bombay Natural History Society, in partnership with Gorewada Zoo, Nagpur, Maharashtra, has also launched a Conservation Breeding Programme for the Lesser Florican. This effort is vital for the species' long-term survival, as it aims to counter population decline in its natural habitat and improve the chances of successful reintroduction in the future.

This book reflects that institutional vision in which science, policy, and society come together to view conservation as a collective responsibility. It aims to help readers better understand the life of the Lesser Florican, its extraordinary displays, and the challenges it faces. This narrative goes beyond the protection of a single bird and speaks to the protection of our grasslands, our biodiversity, and the future of our environment.

"The spectacular leaps of the Lesser Florican are more than a breeding ritual; they symbolise our shared determination to uphold conservation".

डायरेक्टर, बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी (BNHS)

खरमोर (Lesser Florican) भारत के घास के मैदानों का वह अद्भुत पक्षी है, जिसकी छलांगों और प्रजनन नृत्य हमें बार-बार विस्मित करते हैं। यह केवल एक प्रजाति नहीं, बल्कि हमारे परिदृश्य की जीवंतता और नाजुकता का प्रतीक है। जब यह आकाश में उछलता है, तो उसकी उड़ान हमें यह याद दिलाती है कि प्रकृति का उत्सव कितना सुंदर और कितना असुरक्षित है।

BNHS ने इस पक्षी के संरक्षण में अग्रणी भूमिका निभाई है। राजस्थान और मध्य प्रदेश के घास के मैदानों में इसके वितरण और पारिस्थितिकी पर हमारे सर्वेक्षणों ने नीति-निर्माताओं को ठोस आधार प्रदान किया है। मध्य प्रदेश वन विभाग के साथ मिलकर किए गए व्यवस्थित अध्ययनों ने इस संकटग्रस्त प्रजाति की वास्तविक स्थिति को उजागर किया है। राजस्थान के शोकालिया परिदृश्य में हमने सामुदायिक संरक्षित क्षेत्र स्थापित करने की दिशा में कार्य किया है, ताकि स्थानीय समुदाय संरक्षण की इस यात्रा में सक्रिय भागीदार बनें।

हमारे प्रयास केवल अनुसंधान तक सीमित नहीं हैं। BNHS ने घासभूमि संरक्षण को राष्ट्रीय एजेंडा में लाने के लिए लगातार वकालत की है। इसी क्रम में, राजस्थान राज्य जैव विविधता बोर्ड (RSBB) के साथ मिलकर शोकालिया परिदृश्य को जैव विविधता धरोहर स्थल (Biodiversity Heritage Site) घोषित करने की दिशा में पहल की गई है। यह कदम न केवल खरमोर के लिए सुरक्षित आवास सुनिश्चित करेगा, बल्कि पूरे घासभूमि पारिस्थितिकी तंत्र को दीर्घकालिक संरक्षण प्रदान करेगा।

इसके साथ ही, BNHS ने गोरेवाडा प्राणीउद्यान, नागपुर, महाराष्ट्र के साथ मिलकर खरमोर के संरक्षण प्रजनन कार्यक्रम (Conservation Breeding Programme) की शुरुआत की है। यह पहल इस प्रजाति के दीर्घकालिक अस्तित्व के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह प्राकृतिक आवास में घटती संख्या को संतुलित करने और भविष्य में पुनर्वास की संभावनाओं को मजबूत करने का मार्ग प्रशस्त करती है।

यह पुस्तक उसी संस्थागत दृष्टिकोण का हिस्सा है—जहाँ विज्ञान, नीति और समाज मिलकर संरक्षण को साझा जिम्मेदारी मानते हैं। इसका उद्देश्य है कि पाठक खरमोर के जीवन, उसकी अद्भुत छलांगों और उसके संरक्षण से जुड़ी चुनौतियों को गहराई से समझें। यह केवल एक पक्षी की रक्षा की कहानी नहीं है, बल्कि हमारे घास के मैदानों, हमारी जैव विविधता और हमारे पर्यावरणीय भविष्य की रक्षा की कहानी है।

"खरमोर की छलांगें केवल प्रजनन का उत्सव नहीं हैं, वे हमारे संरक्षण संकल्प की जीवंत अभिव्यक्ति हैं।"

आइये मैं आपको अपने बारे में सब
कुछ बता दूँ!"

Come, let me tell you
everything about myself!"



मेरी कथा सुनिए जब
आप नहीं थे, तब भी मैं
था, जब आप आकर बसे
तब भी मैं था, आज भी
हम साथ हैं, और ये साथ
बना रहें इसीलिए मैं
बताऊंगा अपनी सारी
पीड़ा, ताकि यह संबंध
और मज़बूत हो सके

Listen to my story—I
was here even before
you existed. I was
here when you arrived
and settled, and even
today, we are
together. And so, I will
share my joys and
pains with you, so
that this bond may
strengthen."

1. घास के मैदानों का एक अनोखा नृतक।

मैं हूँ लेसर फ्लोरिकन, जिसे हिन्दी में लोग खरमोर कहते हैं- भारत का सबसे छोटा बस्टर्ड। मैं घने जंगलों या शहरों में नहीं रहता, बल्कि उन खुले घास के मैदानों में बसता हूँ जो आकाश के नीचे सोने जैसी चादर की तरह फैले होते हैं। मैं शर्मीला हूँ, पतला और छोटासा हूँ, मानसून में प्रजनन के लिए घास के मैदानों में आता हूँ, ये मैदान तो सदा ही जीवन से भरे रहते हैं, बस मेरे स्वर और उछलते नृत्य से मानो उनमें एक और चमक उतर आती है। मेरी छलांगों और पुकारों से किसान भी क्षणभर को ठहर जाते हैं, और मुस्कराकर मेरे खेल का आनंद लेते हैं।”

खरमोर
Kharmor



1. A Unique Dancer of the Grasslands

I am the Lesser Florican, known in Hindi as Kharmor– India's smallest bustard. I do not live in dense forests or bustling cities, but in the open grasslands that stretch beneath the sky like a golden sheet. I am shy, slender, and small, and I arrive in these grasslands during the monsoon season to breed. My calls and leaps bring the fields to life – and often, I even entertain farmers with my performance.

2. आइए, आपको मिलवाता हूँ अपने परिवार से Come, let me introduce you to my family



नर/Male

मादा/ Female

बच्चा/Chick

क्या आप जानते हैं? मेरी छलांग साइकिल के हैंडल के जितनी ऊँची होती हैं।
Did you know? My leap is as high as a bicycle handlebar!



मैं करीब 45 सेंटीमीटर ऊँचा होता हूँ, मेरे सिर पर एक छोटी सी कलंगी होती है जो मुझे खास बनाती है। इसके साथ ही शरीर पर काले और सफेद रंग की खूबसूरत धारियाँ होती हैं, मेरे पंख व पैर भूरे रंग के होते हैं। लेकिन जैसे ही सर्दियाँ आती हैं हम दोनों नर-मादा एक जैसे दिखने लग जाते हैं मेरा रंग भी चमक भी कम पड़ जाते हैं।

मादा लगभग 51 सेमी ऊँची तथा नर से थोड़ी बड़ी होती है। प्रजनन के मौसम की शुरुआत में मुझे देखना आसान होता है, लेकिन घोंसले में रहने के बाद मुझे ढूँढना मुश्किल होता है।

[कुछ हफ्ते पहले, घोंसले में मेरे प्यारे बच्चो ने जन्म लिया उनकी माँ उनका पोषण और देखरेक का काम करती है। जब वे अंडे से बाहर निकले, तो बहुत ही छोटे थे - उनका रंग भूरा और काला था, जिससे वे घास में अच्छे से छिप जाते थे। कोई उन्हें आसानी से देख नहीं सकता था, और यही उन्हें सुरक्षित रखता था। हर सुबह, उठते ही उनको उनकी माँ उनको कीड़े-लट और जो भी आपके खेतो को नुकसान पहुंचाते हैं वो खिलाती हैं, वे मज़े से खेलते, इधर-उधर दौड़ते और उनकी माँ की नकल करने की कोशिश करते हैं।]



I'm about 45 centimetres tall, with a small crest on my head that makes me unique. My body is adorned with striking black and white markings, while my wings and legs are brown. But when winter arrives, both me and female begin to look alike- my bright colours fade, and my shine dims too.

The female is about 51 centimetres long and slightly larger than the me. At the start of the breeding season, I am easy to spot, but once I settle in the nest, I become difficult to find.

[A few weeks ago, my adorable chicks hatched from their eggs—tiny, about the size of a pencil. The mother florican takes care of the chicks until they start to fly and become independent. Their brown and black colours help them blend perfectly into the grass, keeping them safe from predators.

Every morning, as soon as they woke up, mother florican feed them insects, caterpillars, and pests that harm your crops. They played happily, ran around, and even tried to imitate their mother.]

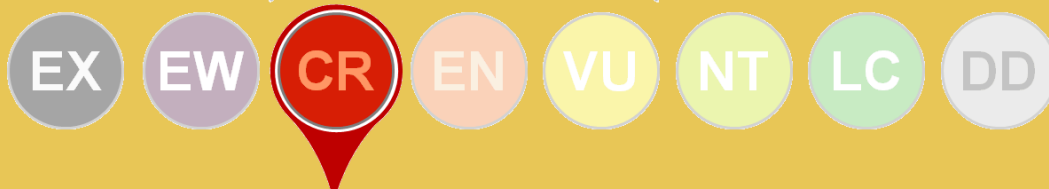
3. मेरी IUCN स्थिति के बारे में

शायद आपको एहसास न हो, लेकिन आप भारत के सबसे भाग्यशाली लोगों में से एक हैं—क्योंकि आप अब भी मुझे देख सकते हैं। कई कारणों से, हमारे पूरे देश में हमारी संख्या घटकर केवल 500-600 तक सिमट गई है। मेरा अस्तित्व गंभीर खतरे में है, और अब मुझे IUCN (प्रकृति के संरक्षण के लिए अंतरराष्ट्रीय संघ) की अत्यंत संकटग्रस्त प्रजातियों की सूची में रखा गया है।

IUCN की स्थिति हमें बताती है कि कोई प्रजाति कितने खतरे में है और वह हमेशा के लिए लुप्त होने के कितने करीब है। यह जानकारी IUCN रेड लिस्ट के ज़रिए साझा की जाती है।

The IUCN status tells us how much danger a species is in and how close it might be to disappearing forever. This information is shared through the IUCN Red List.

Globally Threatened



Critically Endangered

इसका अर्थ है बेहद संकट में

It means "critically endangered."

About my IUCN status

You may not realize it, but you are among the luckiest people in India – because you still get to see me. Due to many reasons, our population across the country has dropped to just 500-600 individuals. My existence is under severe threat, and I am now listed as Critically Endangered by the IUCN (International Union for Conservation of Nature).

4. मैं कहाँ रहता हूँ? – भारत में मेरे घर - सुन्दर घास के मैदान

मुझे सबसे ज़्यादा भारत के राजस्थान, मध्य प्रदेश, गुजरात, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश और महाराष्ट्र के घास के मैदान पसंद हैं । ये जगहें देखने में खाली लग सकती हैं, लेकिन हमारे लिए ये जीवन से भरपूर हैं।

हर घास का तिनका अहम होता है—कुछ घोंसले छिपाते हैं, कुछ पर कीड़े रहते हैं जो हमारा खाना बनते हैं। सदियों से मेरे पूर्वज इन मैदानों में मानसून के साथ कलरव, रोनक और परिवार बढ़ाने के लिए आते रहें हैं किन्तु अब ये घास के मैदान खत्म होते जा रहें हैं।



Where do I live? – My Home in India – The Beautiful Grasslands

I love the grasslands of India, especially those in Rajasthan, Madhya Pradesh, Gujarat, Karnataka, Andhra Pradesh, and Maharashtra. These places may look empty to some, but for us, they are full of life.

Every blade of grass matters—some hide our nests, while others host insects that become our food. For centuries, my ancestors have returned to these grasslands with the monsoon to sing, to celebrate, and to raise their families.

But now... these grasslands are disappearing.

5. भारत के सभी पक्षियों में सबसे अद्भूत मेरा ही नृत्य होता है, छलांगे, पंखों के फड़फड़ाने की अनोखी आवाज़

जब बादल घिरते हैं और मिट्टी से भीनी-भीनी खुशबू आती है, तब मैं अपना नृत्य शुरू करता हूँ। मैं सीधे ऊपर छलांग लगाता हूँ – कभी-कभी तो साइकिल के पहिए से भी ऊंचा! पंख फैलाता हूँ, और पंखों की फड़फड़ाहट से तेज़ आवाज़ करता हूँ, ताकि मादा मुझे देखे। यह किसी जादू जैसा होता है – एक पल मैं घास में छिपा होता हूँ, और अगले ही पल हवा में छलांग लगाता दिखता हूँ !

मेरा नृत्य कहता है: “मैं यहां हूँ, मैं स्वस्थ, ताकतवर और परिवार बनाने लायक हूँ।

Among all the birds of India, my dance is the most remarkable—my leaps into the air, and the unique sound of my fluttering wings.

When dark clouds roll in and the air smells like wet earth, I begin my performance. I leap straight up—sometimes higher than a bicycle wheel—twisting, flapping, and calling to catch the eye of a female watching from below. It's like a magic trick: one moment I'm hidden in the grass, and the next, I leap into the air!

My dance declares:

"I am here – healthy, strong, and ready to start a family."

मेरे प्रदर्शन की आवाज़ सुनने के लिए QR कोड को स्कैन करें



Scan the QR code to hear the sound of my display



क्या आप जानते हैं? प्रजनन काल के दौरान नर एक दिन में 500 बार तक नृत्य करता है!
Did you know? The male dances up to 500 times in a day during the breeding season!

6. मेरा भोजन- जिन लटो और कीड़ो से आप परेशान होते हैं वही मेरा पसंदीदा भोजन ।

जब बरसात आती है और आसमान से पानी बरसता है, तब मुझे ज़्यादा ऊर्जा की ज़रूरत होती है, क्योंकि मैं उस समय बहुत छलौंग लगाता हूँ, उड़ता हूँ और अपने साथी को लुभाने की कोशिश करता हूँ।

मेरा खाना क्या है? ये सब चीज़ें मुझे बहुत भाती हैं:

टिड्डे (लोकस्ट) – मेरा आहार टिड्डों जैसे प्रमुख कृषि कीटों पर भी आधारित होता है, जिससे अप्रत्यक्ष रूप से कृषि फ़सलों को होने वाले नुकसान में कमी आती है।

बीटल्स – कुरकुरे और पौष्टिक!

चींटियाँ – छोटी मगर ताक़तवर, और मेरे पेट के लिए बढ़िया।

इल्ली/ लट (कैटरपिलर) – नरम और स्वादिष्ट।

और भी बहुत सारे छोटे कीट मेरे खाने की लिस्ट में होते हैं!

तो अगली बार जब तुम मुझे किसी हरे मैदान में घूमते देखो, समझ जाना – मैं अपना पसंदीदा खाना ढूँढ़ रहा हूँ!

My Food – The Caterpillars and Insects You Dislike Are My Favorite Meal!

When the monsoon arrives and the sky pours down rain, I need extra energy– because that's when I jump, fly, and try to impress my mate!

So, what do I eat? Here are some of my favorites:

Grasshoppers – a delicious breakfast!

Locusts – I munch on them and help farmers by eating these crop pests.

Beetles – crunchy and full of goodness!

Ants – small but strong, and great for my belly.

Caterpillars – soft and tasty!

And many more tiny insects on my food menu!

So the next time you see me walking in a green field, know that I am probably searching for my favorite dish



क्या आप जानते हैं ? खरमोर पक्षी टिड्डे और टिड्डियों जैसे कीटों को खाकर किसानों की मदद करते हैं।



Did You Know? The Lesser Flamingo helps farmers by feeding on grasshoppers and other crop-damaging insects.



7 . घोंसले की रोचक बाते - माँ खरमोर की जुबानी

मुझे घोंसले के लिए ऊँची और घनी घास बहुत पसंद है। मैं 3 से 4 अंडे देती हूँ - जो लगभग 49 x 41 मिमी आकार के होते हैं। उनका रंग हल्का जैतूनी-भूरा होता है, और उन पर धब्बे, लकीरें और छींटें होती हैं। मैं ये अंडे खुली ज़मीन पर देती हूँ। मैं बहुत सावधानी से उन अंडों पर बैठती हूँ- करीब 21 दिनों तक, बिलकुल चुपचाप, ताकि कोई मुझे देख न सके। लेकिन उस समय हमारे अंडे बहुत असुरक्षित होते हैं। कभी कोई शिकारी जानवर आ जाता है, कभी कोई ट्रैक्टर या मवेशी अनजाने में घोंसले को कुचल देते हैं।

कभी-कभी हमें आवारा श्वान या जंगली जानवरों से भी नुकसान होता है। फिर भी, हम हार नहीं मानते। हम फिर कोशिश करते हैं जैसे सदियों से करते आए हैं। जब मेरे बच्चे अंडों से निकलते हैं, तो वे बहुत छोटे होते हैं लेकिन बहुत फुर्तीले भी। वे लगभग 15 से 30 दिनों तक मेरे साथ रहते हैं। मैं और मेरे बच्चे नर पक्षियों की तुलना में प्रजनन क्षेत्र में कम से कम एक महीना ज़्यादा रुकते हैं। ये अंडे हमारे लिए खज़ाना हैं।

Fascinating Facts About the Nest – From a Mother Kharmor's Perspective

I love tall and dense grass for building my nest. I usually lay 3 to 4 eggs, each about 49 × 41 mm in size. Their colour is a light olive-brown, marked with spots, streaks, and speckles. I lay these eggs directly on the open ground. I sit on them with great care – about 21 days – completely silent, so no one can find me. But during this time, our eggs are very vulnerable. Sometimes predators appear. Sometimes tractors or cattle unknowingly trample the nest.

At times, stray dogs or wild animals cause harm. Still, we do not give up. We try again –just as we have for centuries. When my chicks hatch, they are tiny but very agile. They stay with me for about 15 to 30 days. Compared to the males, my chicks and I remain in the breeding grounds for at least a month longer. To us, these eggs are treasures.



8. विपरीत परिस्थितियों से जंग: मेरी उत्तरजीविता के खतरे



अनजाने में हानी
unintentionally



समझ ना होने के कारण हानी
Lack of awareness



वास्तविक शिकारी
"The real predator"



Battling the Odds
What Threatens My Survival



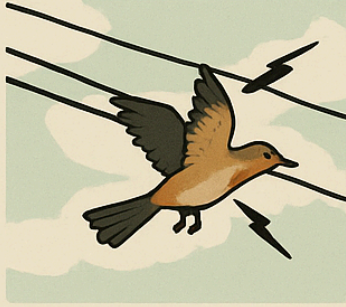
Farm tractors crush nests



Spread of Vilayati Babool



Habitat loss



Electric wires



Predators



Predators



Pesticides



Hunting



Mining

- ट्रैक्टरों से कुचले जानेवाले घोंसले
- विलायती बबूल का बढ़ना
- घास के मैदानों का कम होना
- घास के मैदानों पर अक्षय उर्जा प्रकल्प और पवनचक्की की संख्या बढ़ना
- आवारा कुत्तो की बढ़ती संख्या
- अवैध शिकार
- नई खेती के यंत्र और ज़हरीले रसायन
- बिजली की तारों का बढ़ता जिसके वजह से पक्षियों की टकराकर मौत हो जाना
- स्थानीय लोगों को जानकारी की कमी
- खनन (माइनिंग) का असर

- Nests crushed under tractors
- Spread of invasive *Prosopis juliflora*
- Shrinking grasslands
- Rising number of renewable-energy projects and wind turbines on grassland habitats
- Increasing numbers of free-ranging dogs
- Illegal hunting
- Modern farming machinery and harmful agro-chemicals
- Expansion of powerlines, leading to bird collisions and deaths
- Lack of awareness among local communities
- Impacts of mining activities

9. मेरे सामने आने वाले खतरे - "एक सिकुड़ती दुनिया"

हर साल मेरे लिए जगह कम होती जा रही है। खेत मेरे मैदानों को घेर लेते हैं। कीटनाशक मेरे खाने को ज़हरीला कर देते हैं और बिजली की तारें मेरे आकाश की उड़ान को सीमित कर देती हैं। सड़कें, फैक्ट्रियां और बाड़ें मेरे नाचने और घोंसला बनाने की जगह छीन लेती हैं। मेरा समय कम होता जा रहा है, और मुझे आपकी मदद चाहिए।



The Dangers I Face – "A Shrinking World"

Every year, I lose more space. Fields creep into my grasslands. Pesticides poison my food, power lines cut across my skies. Roads, factories, and fences leave no room for dancing or nesting. I am running out of time, and I need your help.



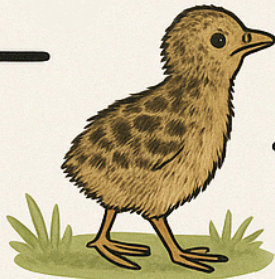
चलो भूलभुलैया पहेली खेलते हैं!

मैं छोटा-सा बच्चा हूँ, गुम गई हैं मेरी माता जी। तुम ही मेरे साथी हो, तुम पर ही है विश्वास।
सभी खतरों से बचाकर कर दो मुझको पार, दूर खड़ी मेरी माँ कर रही है इंतज़ार।

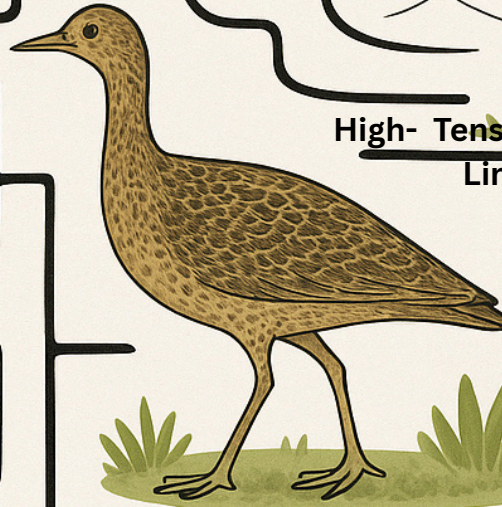
Tractors/Heavy machinery



Free- ranging dogs



LESSER
FLORICAN CHICK



LESSER FLORICAN FEMALE

HABITAT DESTRUCTION



High- Tension Power
Line

Let's play a maze puzzle!

I'm a little chick, and my mother is lost.
You are my only companion now—I trust you.
Guide me safely through all the dangers,
My mother is waiting for me at the far end with hope in her eyes.



10. “2024 मे घटी हुई मेरे साथ घटनाएं”

“कितना सुन्दर दिन था वो, मैं अपनी धुन में| देखा किसी ने चोंक गया, बच गया एक छोटा सा संसार।”
|| पेंच बाघ संरक्षित क्षेत्र ||

अरे दोस्तों, क्या आपको मई 2024 का वो दिन याद है? अरे वह दिन कितना रोमांचकारी था। मैं और मेरा दोस्त घनी घास के ऊपर उड़ रहे थे, किसी शांत सी जगह की तलाश में और सोचो क्या? हम पहुँच गए एक खूबसूरत जगह - पेंच बाघ संरक्षित क्षेत्र नामक एक सुन्दर स्थान पर ! हमें नहीं पता था कि ये कोई बड़ी बात है नहीं देखा। जब तक कि हमने एक इंसान को बेहद खुश और कैमरा के साथ उनका नाम था अविनाश भगत, और वह हमें देख खुश और भावुक हो गया हमने उसे कहते सुना, 'खरमोर... यहाँ?!

पता चला, पेंच में खरमोर पहले किसी ने नहीं देखे थे, इसीलिए हम दोनों को एक नयी जगह पर देखकर सभी बहुत खुश हुए और इसी खुशी ने पेंच को बदल दिया। वन विभाग के अधिकारियों ने तो अपने योजनाएँ ही बदलनी शुरू कर दीं ताकि हमारे जैसे पक्षी वहाँ सुरक्षित रह सकें।

सोचो ज़रा - सिर्फ उड़ते हुए ही हमने एक पूरे अभयारण्य का भविष्य बदल दिया !
आप समझे एक छोटी सी उड़ान, एक नृत्य और हमारा मात्र दिखाई देना कितना बड़ा काम कर सकता है!"



10. Incidents that happened to me in 2024

“What a beautiful day it was! I was on my own rhythm.
Someone saw me... was astonished, and a tiny world was saved.”
|| Pench Tiger Conservation Area ||

"friends, do you remember that day in May 2024? Oh, what an exciting day it was!
My friend and I were flying over the tall grass, searching for a quiet place to rest – and guess what? We ended up in a beautiful place called the Pench Tiger Reserve!
We had no idea it was important until we noticed a man, overjoyed, holding a camera. His name was Avinash Bhagat. He was thrilled, even emotional, when he saw us. We heard him exclaim, ‘Lesser Florican... here?!’

No one had ever seen a Florican in Pench before. Seeing both of us there brought great happiness—and that happiness led to change.
The forest department even revised its plans so that birds like us could be safe here here.

Just imagine—simply by flying, we changed the future of an entire sanctuary!
Do you see now how a small flight, a dance, and just our presence can create such a big impact?"

खटाक क्लिक - वो दिन जब अचानक ही मैं कैद हुआ कैमरे में - स्थान - अंधेरी, ताडोबा नेशनल पार्क - हरा घास का मैदान

मैं बड़ी शान से चल रहा था, थोड़ा नाच भी रहा था तभी एक अनोखी क्लिक की आवाज़ आई, मैं चौंका कोई शिकारी ना हो, पर आश्चर्य, वहां थे वन विभाग के रेंजर जो बेहद खुशी से बात कर रहे थे की हमारे ट्रैप कैमरे ने खरमोर का फोटो खिंचा है वह कह रहे थे की हमारे में कई सुन्दर एक से बढ़कर एक जानवर, पक्षी हैं जिसकी रक्षा हम करते हैं, अगर खरमोर भी यहाँ आने लगे तो इससे बड़ी बात देश भर के लिए कोई नहीं होगी।

क्योंकि किसी भी इन्सान ने उससे पहले कभी भी ताडोबा में खरमोर कभी नहीं देखा था मैं चाहता भी नहीं था मुझे कोई देखे - पर फिर लगा की अगर ऐसे सुरक्षित नए घर हमें मिल जाये तो कितना अच्छा हो पर याद आया अब अजमेर के शोकलिया और उसके आस पास भी मेरे मित्र किसान और बच्चे मेरा इंतज़ार करते रहते हैं क्योंकि मैं हूँ बरसात का अग्रदूत किसानों का खास मित्र।

Tadoba Tiger Reserve Attracts Rare Birds In Village-Free Area

The reserve is home to more than 100 individual tigers, making it one of the most important conservation landscapes in central India

Press Trust of India | [India News](#) | Apr 13, 2025 11:10 am IST

Read Time: 3 mins

Share



"Click! That sudden moment when I was captured on camera

Location: Andheri, Tadoba National Park – a lush green grassland."

I was walking with great pride, even dancing a little, when suddenly I heard an unusual click sound. I was startled – could it be a predator?

But to my surprise, it was the forest department rangers, joyfully talking among themselves, saying, "Our trap camera has captured a photo of the Lesser Florican!" They were saying that our forest is home to many beautiful and extraordinary animals and birds, and we protect them all.

"If the Florican has started appearing here too, then there can be no greater news for the entire country," they said – because no human had ever seen a Florican in Tadoba before. I never really wanted to be seen – but then I thought, how wonderful it would be if we found such new safe homes across the land! Still, I remembered – even today, in Shokaliya (Ajmer) and its nearby fields, my dear friends – farmers and children – eagerly await my return. Because I am the herald of the rains, the special friend of the farmers.

काश ! की मुझे भी मिल पाता समय पर इलाज !!

“मैं खरमोर बच तो नहीं सका पर मेरी आत्मा तुम्हे बताती है वह दुर्घटना जिसका कारण मेरे जीवन का हुआ अंत। स्थान औरंगाबाद का हिमायत बाग़, मेरे पखों की ताकत खत्म हो चुकी थी वे टूट गए थे पावों में ताकत न बची थी, थकान उड़ान गिरना, उड़ना बचाना सब कुछ हुआ था आवारा कुत्ते के कारण जो मुझे खाने के लिए पीछा कर रहे थे। एक जलधारा के पास, थोड़ा छुप कर संघर्ष कर रही थी की एक व्यक्ति जिसका नाम था शेख शोएब जिन्हें पक्षियों से विशेष प्रेम था उन्होंने मुझे उठाया और पहले जलीय पक्षी समझा फिर ध्यान से पंजे पंख देख वो समझ गया मैं कोई दुर्लभ पक्षी हूँ जैसे ही वहां वन्य जीव वार्डन किशोर पाठक से मिले तो उन्होंने देखते ही पहचान लिया अरे! यह तो खरमोर है।”

“नागपुर या पुणे से कोई पशु चिकित्सक आता तब तक उन्होंने बहुत इलाज और प्रयास किया पर विशेषज्ञों की कमी और दिशा ना मिलने के कारण मैं न ठीक हो सकी ना मेरी उड़ान संभव हो सकी मरते मरते मुझे याद आया की 2020 में मेरी उड़ान का रास्ता मंत्रालय द्वारा नोटिस किया गया किन्तु अब घास के मैदानों का बदलाव हमारा रास्ता बदल रहे हैं कहा उतरे? कहाँ विश्राम करे? कैसे लम्बी उड़ानों को कम करे? कई सवाल पर जवाब हमारे पास नहीं आपके पास हैं, यही सोचते सोचते मैं मृत्यु की गोद में सदा के लिए सो गयी मेरी अकाल असमय मौत हो गयी।”

Forest department faces flak after rescued lesser florican dies

Prasad Joshi / TNN / Updated: Nov 2, 2022, 12:09 IST

A lesser florican — a critically endangered bird that was rescued in an injured condition from Himayat Bagh on October 27 — succumbed to its wounds. The forest department on Tuesday revealed that the bird had died within hours of being rescued. This sparked widespread criticism.



AURANGABAD: A lesser florican — a critically endangered bird that was rescued in an injured condition from Himayat Bagh on October 27 — succumbed to its wounds. The forest department on Tuesday revealed that the bird had died within hours of being rescued. This sparked widespread criticism. Incidentally, no avian veterinary expert was available with the Aurangabad forest department to treat the rare bird.

The bird was found in a nullah behind Himayat Bagh

"If only I had received timely treatment too..."

"I couldn't survive... but my soul speaks to you now — about that tragic incident which brought my life to an untimely end." The place was Himayat Bagh in Aurangabad. The strength in my wings was gone — they were broken. My legs could no longer support me. I was exhausted — struggling between flight and fall, trying to escape... all because of stray dogs chasing me down to eat me. Near a stream, I was hiding and trying to survive... when a man named Sheikh Shoab, someone with a deep love for birds, found me. At first, he thought I was a waterbird. But after carefully looking at my claws and feathers, he realized I was something rare. As soon as he met Wildlife Warden Kishor Pathak, the warden recognized me instantly and exclaimed, "Oh! This is a Lesser Florican!" They tried their best — treating me, caring for me. But no expert veterinarian came on time.

Without the proper guidance and medical support, I couldn't be saved. My wings couldn't fly again. As I lay dying, I remembered — in 2020, my flight path had been noticed by the ministry. But now... the grasslands are changing. Our routes are vanishing. Where do we land? Where do we rest? How do we reduce the fatigue of our long journeys? So many questions. But the answers... they are not with us. They are with you. And with that thought, I slowly faded away... into the eternal sleep of death — a premature and untimely death.

11. घास के मैदान ही क्यों महत्वपूर्ण हैं - " घास के मैदान भी प्राकृतिक जंगल होते हैं "

लोग अक्सर भूल जाते हैं कि घास के मैदान भी विशेष तरह के जंगल होते हैं जिन्हें बचाना ज्यादा कठिन होता है, ये कार्बन को संजोते हैं, मिट्टी के अपक्षय को रोकते हैं, और खासकर हम जीवों का घर होते हैं—जैसे मेरा बड़े भाई गोड़ावन, तिलौर, बंगाल बस्टर्ड, भेड़िए, लोमड़ियां, चिंकारा काले हिरण, और इतर गोडावण !

अगर घास के मैदान न हों, तो कई प्रजातियां हमेशा के लिए लुप्त हो जाएंगी। ये बंजर ज़मीन नहीं हैं; ये जीवन का खज़ाना हैं। फिर भी, भारत में ये सबसे ज़्यादा उपेक्षित पारिस्थितिकी तंत्र हैं। कुछ जीव केवल घास के मैदानों में ही जीवित रह सकते हैं जो बहुत कठोर जीवन जीने के लिए बने हैं।

Why Are Grasslands Important? – "Grasslands Are Natural Forests Too"

People often forget that grasslands are a special kind of forest and protecting them is even more challenging. They store carbon, prevent soil erosion, and most importantly, they are home to unique wildlife like us—my big brother the Great Indian Bustard, Bengal Florican, Indian grey wolf, Indian small Fox, Dessert Fox, Blackbuck, Chinkara and many more.

Without grasslands, many species would vanish forever. These are not barren lands—they are treasures of life. Yet, in India, grasslands remain one of the most neglected ecosystems. Some species can survive only in grasslands, as they are adapted to endure life in these harsh but vital habitats.





ध्यान से देखो! दाईं ओर की तस्वीर में नर खरमोर में कौन सी 3 चीज़ें गायब हैं ?

1).....

2).....

3).....



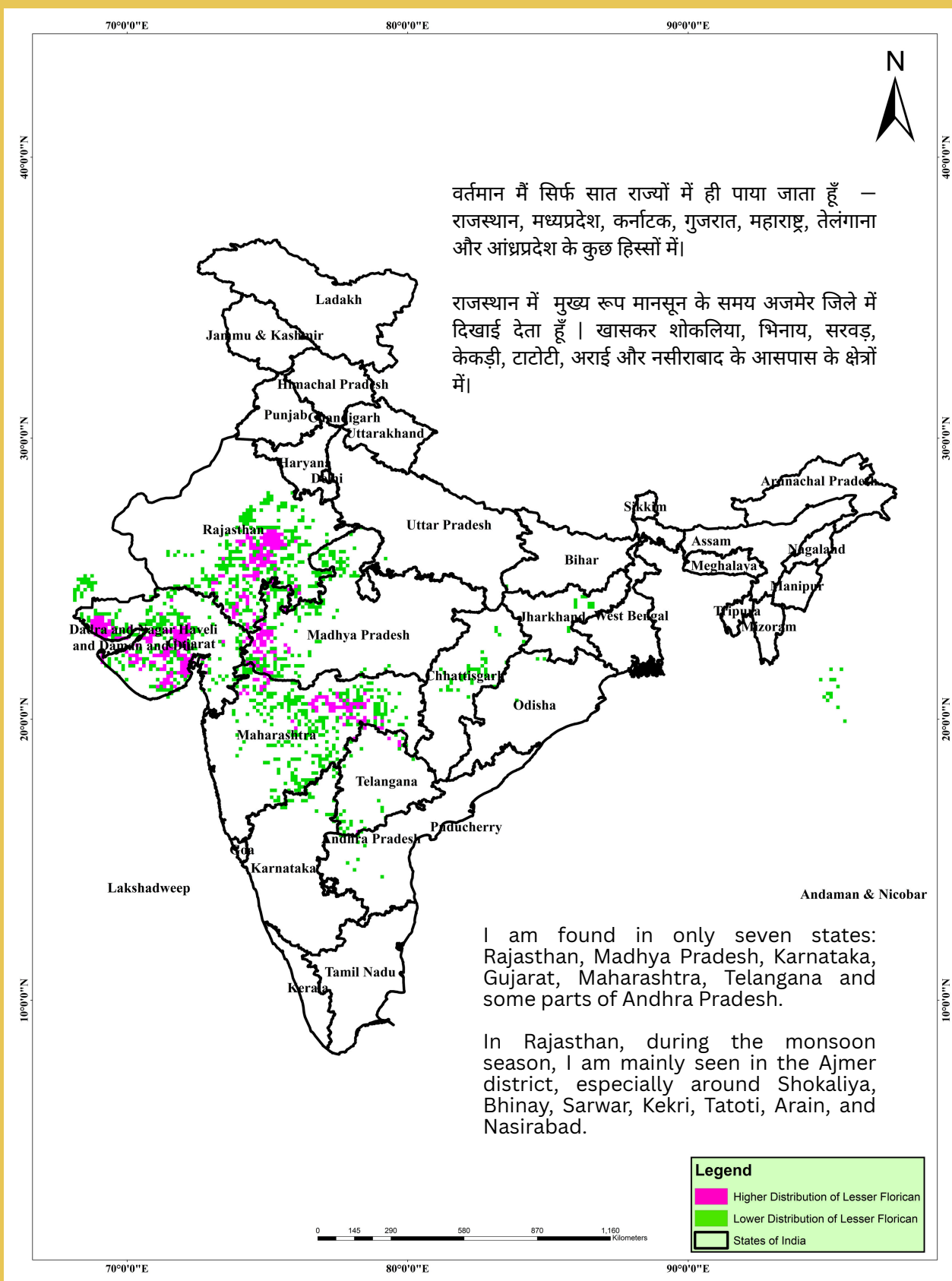
Look carefully! Which three features are missing in the male Lesser Florican in the picture on the right?

1).....

2).....

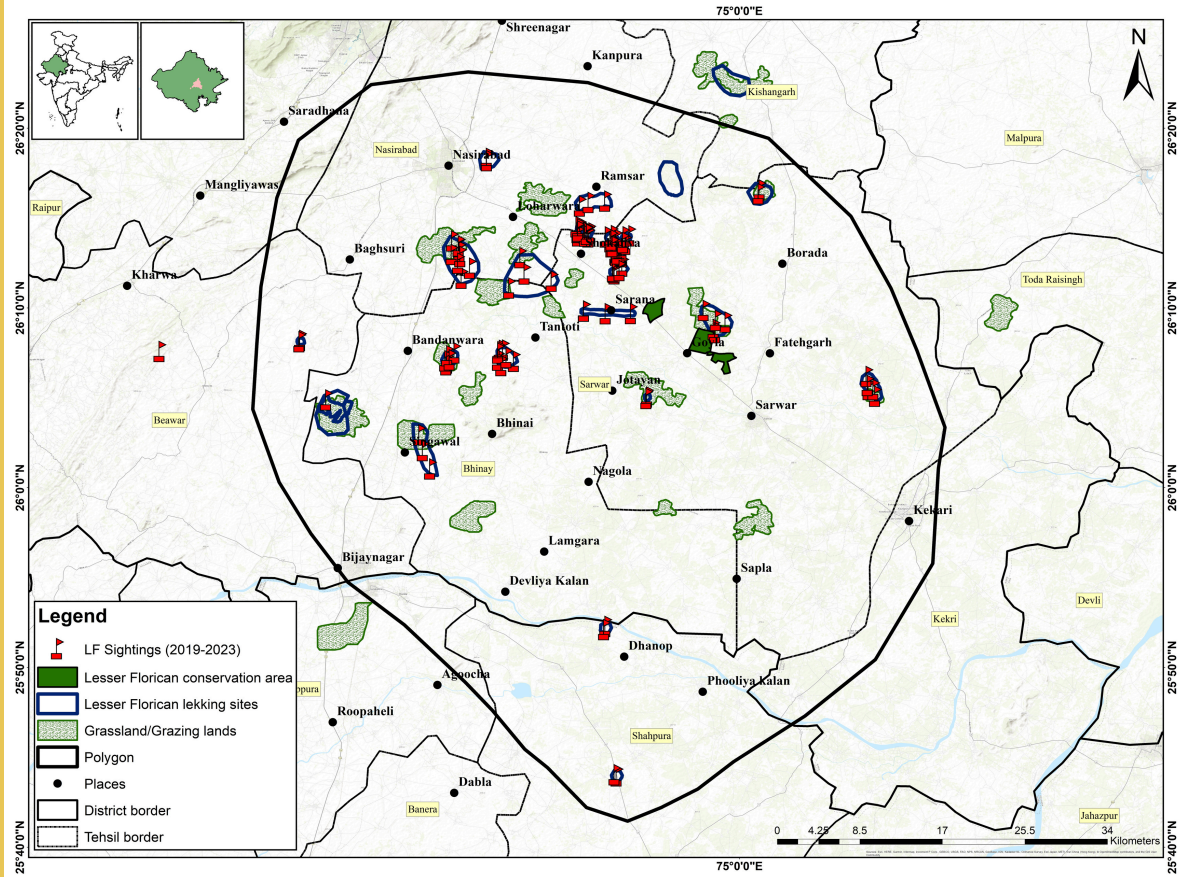
3).....

11. मेरे घर कहाँ-कहाँ है ।



Where Is My Home?

12. मेरा घर राजस्थान और गुजरात में । My home in Rajasthan and Gujarat.



मेरे घरों का हाल सुनिए ।

गुजरात- वेलावादार के सुनहरे घास के मैदान, बहुत ही सुन्दर और आप ही के भाई-बहिन, जो हमें बहुत स्नेह देते हैं। हमारी सुरक्षा करते हैं जब लम्बी उड़ानों के बाद हम वहां उतरते हैं वे हमें देखकर बहुत खुश होते हैं साथ ही हमारे संरक्षण में बच्चे, बूढ़े और जवान सभी एक साथ जुटे हुए हैं।

राजस्थान - अजमेर के आस पास हमारा डेरा है पर यहाँ हमारे रहने योग्य घास के मैदान दूर दूर और छोटे छोटे हिस्सों में बटे हुए हैं हमें नाचने, बच्चों को बड़ा करके साथ ले जाने के लिए बहुत संघर्ष करना पड़ रहा है, अनजाने में लोगो के द्वारा गुजरने, खेतों में आने जाने के दौरान, घोसलों को बड़ा नुकसान उठाना पड़ रहा है अब वेलावादार और अजमेर दोनों ही जगहों पर हमें आपका सहयोग, ही बचा सकता है, नहीं तो हम हमेशा के लिए इस धरती से गायब हो जायेंगे ।, हमें आशा है आप लोग हमारा अवश्य सहयोग कर आबाद करेंगे।

Let me tell you about two of my homes.

Gujarat- The golden grasslands of Velavadar are truly beautiful. The people there welcome us with great affection. They protect us, and after our long flights, when we land there, they greet us with joy. Children, the elderly, and the youth all come together to help conserve us.

Rajasthan- Near Ajmer, we have made our home, but the grasslands suitable for us are scattered in small, distant patches. It is difficult to dance, raise our chicks, and keep them safe. Unintentional human activity—such as people passing through or working in the fields—causes serious damage to our nests. Now, in both Velavadar and Ajmer, only your support can save us. Otherwise, we may disappear from the earth forever. We hope you will help us and restore our home

कविता

राजस्थान की धरती न्यारी, जहाँ की बात है सबसे प्यारी।
वर्षा का दूत, किसान का साथी, खरमोर लाता खुशियों के गीत।
खर मतलब घास, मोर जो नाचे, खुश हो मौसम, जब ये बाँचे।
खुले मैदानों में वो इठलाए, ऊँची घासों में छुप-छुप जाए।
थोड़ी सी बारिश, थोड़ा सा शोर, और झूम उठे प्यारा खरमोर!
पंख फैलाए, ऊँच कूद करे, जैसे नाच में गीत सुर भरे।
सब बच्चे बोले – देखो देखो! खरमोर आया, खुशी है लेखो!
तो आओ बच्चो, ये वादा करें, इस प्यारे पंछी को बचा कर रखें।

कविता - साँची श्रीवास्तव

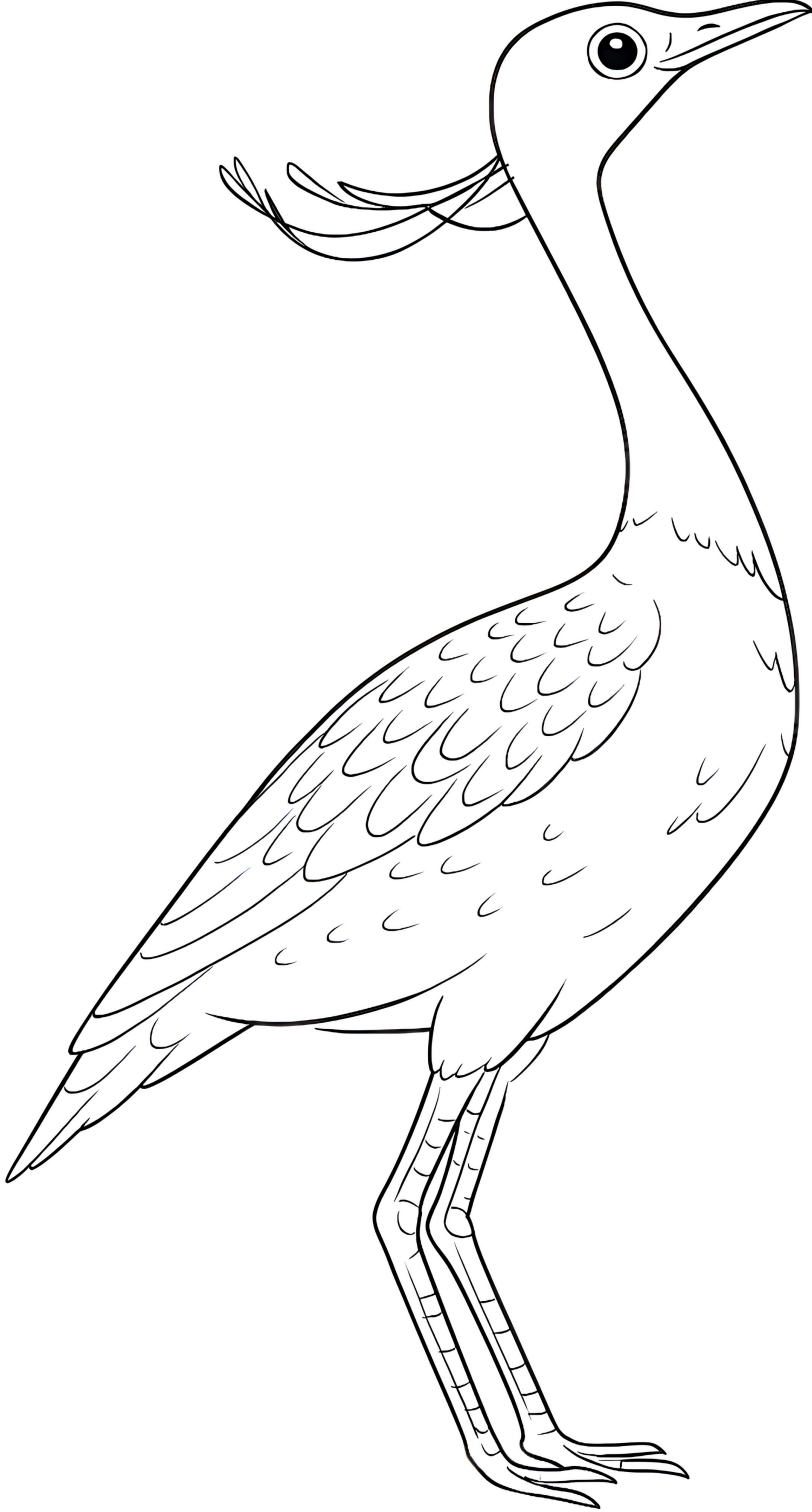
Poem

Rajasthan's a land so bold and bright,
With sandy dunes and stars at night!
Its animals are wild and grand,
And birds that dance upon the land!
But wait, who's that with feathers neat?
It's Kharmor Bird with dancing feet!
A symbol of joy, of rain and cheer,
And a farmer's friend throughout the year!
With a wiggly walk and a fancy show,
He struts around like, "Look at me go!"
So come along, don't miss the treat,
Let's learn about this bird so sweet!

Poem - By Sanchi Shrivastav



दोस्त देखते हैं कौन सबसे सुन्दर रंग भरता है॥



Friends, Let's Fill the Colours in My Sketch!

13. संरक्षण योद्धा - "मानव हृदयों में आशा"

लेकिन सब कुछ निराशाजनक नहीं है। संरक्षणवादी, वन रक्षक, स्थानीय समुदाय और वैज्ञानिक हमें बचाने के लिए काम कर रहे हैं। वे हमारी गतिविधियों पर नज़र रखते हैं, हमारे घोंसलों की रक्षा करते हैं और किसानों को घास के मैदानों की देखभाल करना सिखाते हैं। बच्चे प्रकृति क्लबों में शामिल हो रहे हैं। कलाकार हमारी कहानियाँ चित्रित कर रहे हैं। हमें भुलाया नहीं गया है। अभी तक नहीं।



12. Conservation Heroes – "Hope in Human Hearts"

But it's not all gloom. Conservationists, forest guards, local communities, and scientists are working to save us. They track our movements, protect our nests, and teach farmers to care for grasslands. Children are joining nature clubs. Artists are painting our stories.

We are not forgotten. not yet.

14. आप क्या कर सकते हैं – "आप मेरी कहानी का हिस्सा है, आप और मैं अलग अलग नहीं हैं।"

चाहे आप छोटे हों, आपके काम मायने रखते हैं। आप मुझे अपनी किताबों में बना सकते हैं, स्कूल में मेरी बात कर सकते हैं, या अपने परिवार के साथ किसी घास के मैदान की सैर कर सकते हैं। आप दूसरों को बता सकते हैं कि हम पक्षी क्यों ज़रूरी हैं। आप सिर्फ मेरी कहानी पढ़ नहीं रहे—अब आप इस कहानी का हिस्सा हैं।

"What you can do - You are a part of my story; you and I are not separate."

Even if you're small, your actions matter. You can draw me in your books, talk about me at school, or visit a grassland with your family. You can tell others why we birds matter. You are not just reading my story—you are now part of it.

अजमेर का
शुभंकर

Mascot
of Ajmer



जहाँ घास लहराए, वहीं खरमोर आए,
कुदरत की ये पुकार, हम सब निभाएं।

Wherever the grass grows, the
Kharmor comes,
Let us all honor this call of nature.



सबको मिलकर चलना होगा - छात्र, किसान, वन रक्षक हम , मिलकर लगायेंगे जोर - बचायेंगे हमारा प्यारा खरमोर

When people and nature join hands—Farmers, students, and forest guards come together to save the sky dancer!



बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी (BNHS) के बारे में

बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी (BNHS) की स्थापना 15 सितंबर 1883 को हुई थी। यह भारत की सबसे पुरानी और सबसे बड़ी गैर-सरकारी संगठनों में से एक है, जो प्रकृति संरक्षण और जैव विविधता अनुसंधान के लिए समर्पित है। पिछले 140 वर्षों से, बीएनएचयस निरंतर भारत की प्राकृतिक संपदा की रक्षा, प्राकृतिक संसाधनों के सतत उपयोग को बढ़ावा देने और वर्तमान एवं भावी पीढ़ियों के लिए पर्यावरण की सुरक्षा में जुटी हुई है। बीएनएचयस अनुसंधान के विभिन्न क्षेत्रों को अनुदान के माध्यम से सहयोग देती है और अपनी प्रतिष्ठित पत्रिका "जर्नल ऑफ द बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी" का प्रकाशन करती है। इस संस्था से कई प्रसिद्ध प्रकृतिविद जुड़े रहे हैं, जिनमें महान पक्षी विज्ञानी डॉ. सलीम अली और एस.डिलन रिप्ले प्रमुख हैं। बीएनएचयस का मार्गदर्शक सिद्धांत हमेशा यही रहा है कि प्रकृति संरक्षण का आधार वैज्ञानिक अनुसंधान होना चाहिए - और यही विचारधारा इसके पूर्व अध्यक्ष डॉ. सलीम अली के कार्यों में स्पष्ट रूप से झलकती है।

बीएनएचयस का उद्देश्य (Mission)

प्रकृति का संरक्षण करना, विशेषकर जैव विविधता का, शोध, शिक्षा और जन-जागरूकता पर आधारित कार्यों के माध्यम से।

बीएनएचयस की दृष्टि (Vision)

एक ऐसा भविष्य, जहाँ इंसान और प्रकृति एक ही साँस में जीते हों, जहाँ भारत की पारिस्थितिक विरासत को वैज्ञानिक संरक्षण और प्राकृतिक संसाधनों के समझदारी भरे उपयोग से सँभालकर रखा जाए।

About Bombay Natural Society (BNHS)

The Bombay Natural History Society (BNHS), established on 15 September 1883, is one of India's oldest and largest non-governmental organizations dedicated to nature conservation and biodiversity research. For over 140 years, BNHS has worked to protect India's natural wealth, promote the sustainable use of natural resources, and safeguard the environment for present and future generations. Throughout its history, BNHS has supported a wide range of research initiatives through grants and has published the prestigious Journal of the Bombay Natural History Society. The Society has been home to many renowned naturalists, including legendary ornithologists Dr Sálim Ali and S. Dillon Ripley. The guiding principle of BNHS has always been that conservation must be rooted in rigorous scientific research—a philosophy exemplified by its former president, Dr Sálim Ali.

Mission of BNHS

To conserve nature, primarily biological diversity, through action based on research, education, and public awareness.

Vision of BNHS

A future where humanity lives in harmony with nature, and where India's ecological heritage is preserved through science-based conservation and wise use of natural resources.



खरमोर के संरक्षण की योजना

राजस्थान के प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वन्यजीव) एवं मुख्य वन्यजीव प्रतिपालक (CWLW) तथा अतिरिक्त प्रधान मुख्य वन संरक्षक (APCCF) के सुझाव के आधार पर, अजमेर के उप वन संरक्षक (DyCF) कार्यालय द्वारा बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी (BNHS) से शोकलिया क्षेत्र में खरमोर पर एक संरक्षण-केंद्रित सर्वेक्षण कराने का अनुरोध किया गया। मुख्य वन्यजीव प्रतिपालक, राजस्थान की सिफारिश के अनुसार, BNHS ने 4 मई 2017 को उनके कार्यालय में एक परियोजना प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

इसके प्रत्युत्तर में, हमें 25 जुलाई 2017 को मुख्य वन्यजीव प्रतिपालक के कार्यालय से एक स्वीकृति पत्र प्राप्त हुआ (संदर्भ क्रमांक: F4(T)/Vividha/CWLW/2017-18/3989)। इसके पश्चात्, जुलाई-अगस्त 2017 के दौरान, एक देशव्यापी संयुक्त सर्वेक्षण आयोजित किया गया, जिसमें वन्यजीव संस्थान (WII), द कॉर्बेट फाउंडेशन (TCF), और विभिन्न राज्य वन विभागों ने भाग लिया (Dutta et al. 2018)।

इन संयुक्त सर्वेक्षणों के माध्यम से खरमोर की प्रारंभिक स्थिति और वितरण का आकलन किया गया। इस प्रक्रिया में WII, TCF, स्थानीय स्वयंसेवी संगठन, वन विभाग और अनेक स्वयंसेवकों ने भागीदारी की। ये सर्वेक्षण प्रजाति के प्रजनन काल (जुलाई-अगस्त) के दौरान 2017 और 2018 दोनों वर्षों में किए गए। इन दो लगातार प्रजनन ऋतुओं (2017 और 2018) में, अजमेर और आसपास के क्षेत्रों में लगभग 30-40 नर खरमोरों का प्रत्यक्ष अवलोकन किया गया। चूंकि नर और मादा की संख्या लगभग बराबर मानी जाती है, और कुछ पक्षियों के अदृश्य रह जाने की संभावना को ध्यान में रखते हुए, पहले शोकलिया क्षेत्र एवं उसके आसपास के इलाकों में लगभग 100-125 खरमोर होने का अनुमान था। हालाँकि, अब इनकी घटती संख्या चिंता का विषय बन गई है, अभी हम लेसर फ्लोरिकन को बचाने के लिए छह विशेष स्थानों को जैव विविधता विरासत स्थल बनाने की उम्मीद एवं प्रयास में लगे हैं, ताकि यह पक्षी सुरक्षित रूप से रह सके, और आसपास के समुदाय भी हमारी मदद कर रहे हैं।

About the Project

Based on the recommendation of the Additional Principal Chief Conservator of Forests (APCCF) and the Chief Wildlife Warden (CWLW) of Rajasthan, the Office of the Deputy Conservator of Forests (DyCF), Ajmer, approached the Bombay Natural History Society (BNHS) to conduct a conservation-focused survey of the Lesser Florican (locally known as Chhota Marghatva) in the Shokaliya region.

Following the CWLW's recommendation, BNHS submitted a project proposal to his office on 4 May 2017. A sanction letter was later issued (Ref. No. F4(T)/Vividha/CWLW/2017-18/3989), dated 25 July 2017. Subsequently, during July–August 2017, a joint, pan-India survey was carried out in collaboration with the Wildlife Institute of India (WII), The Corbett Foundation (TCF), and various State Forest Departments (Dutta et al. 2018).

The preliminary status and distribution of the Lesser Florican were assessed through these surveys, which included WII, TCF, local NGOs, volunteers, and State Forest Department officials. Surveys were conducted during the species' breeding season (July–August) in both 2017 and 2018. Over these two seasons, approximately 30–40 male Lesser Floricans were directly sighted in and around Ajmer. Assuming a roughly 1:1 male-to-female ratio and accounting for undetected individuals, earlier estimates suggested the presence of 100–125 Lesser Floricans in the Shokaliya region and adjoining areas. However, their continued decline has now become a serious cause for concern. We are currently working to save the Lesser Florican by designating six specific locations as Biodiversity Heritage Sites, allowing the bird to live safely, and the surrounding communities are also helping us.

सरकारी सहयोग एवं संस्थागत समर्थन

खरमोर के प्रभावी संरक्षण के लिए सरकारी एजेंसियों के साथ सशक्त और निरंतर समन्वय अत्यंत आवश्यक है, विशेष रूप से इसलिए क्योंकि यह प्रजाति प्रायः औपचारिक संरक्षित क्षेत्रों के बाहर प्रजनन करती है। बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी (BNHS) ने राजस्थान के मुख्य वन्यजीव प्रतिपालक (Chief Wildlife Warden) से अजमेर ज़िले में वैज्ञानिक निगरानी, आवास मूल्यांकन तथा संरक्षण हस्तक्षेपों के संचालन हेतु औपचारिक अनुमति प्राप्त की है। यह स्वीकृति व्यवस्थित मैदानी सर्वेक्षण, प्रशिक्षित फील्ड कर्मियों की तैनाती तथा वन विभाग की क्षेत्रीय और वन्यजीव इकाइयों के साथ प्रत्यक्ष सहयोग को संभव बनाती है।

इसी क्रम में, बीएनएचयस और राजस्थान राज्य जैव विविधता बोर्ड (Rajasthan State Biodiversity Board) के मध्य एक समझौता ज्ञापन (MoU) वर्तमान में विकासाधीन है। इस MoU का उद्देश्य दीर्घकालिक संस्थागत सहयोग को औपचारिक रूप देना, संरक्षित क्षेत्रों से बाहर संरक्षण नियोजन को प्रोत्साहित करना तथा वैज्ञानिक संस्थानों और राज्य एजेंसियों के बीच ज्ञान के आदान-प्रदान को सुदृढ़ करना है।

इस व्यापक संदर्भ में, राजस्थान के शोकलिया तथा इसके आसपास के क्षेत्रों का कृषि-चारागाह परिदृश्य जैव विविधता विरासत स्थल (Biodiversity Heritage Site—BHS) की घोषणा के लिए एक अत्यंत उपयुक्त प्रत्याशी के रूप में उभरता है। यह परिदृश्य न केवल खरमोर के लिए महत्वपूर्ण प्रजनन और उपयोग क्षेत्र प्रदान करता है, बल्कि पारंपरिक भूमि-उपयोग प्रणालियों के माध्यम से जैव विविधता के संरक्षण का एक प्रभावी उदाहरण भी प्रस्तुत करता है। बीएनएचयस वर्तमान में इस क्षेत्र में वैज्ञानिक अध्ययन, पारिस्थितिक मूल्यांकन तथा हितधारक परामर्श की प्रक्रिया में संलग्न है और संभावित जैव विविधता विरासत स्थलों की पहचान एवं उनके लिए औपचारिक प्रस्ताव तैयार करने का कार्य कर रही है।

खरमोर जैसी प्रजाति, जो समुदाय-प्रबंधित कृषि-चारागाह भूमि, राजस्व घासभूमियों और अर्ध-प्राकृतिक परती क्षेत्रों पर अत्यधिक निर्भर करती है, के दीर्घकालिक संरक्षण के लिए ऐसे संस्थागत सहयोग और नीतिगत पहलें व्यवहार्य एवं स्थायी आबादी सुनिश्चित करने की दिशा में निर्णायक भूमिका निभाती हैं।

Government Collaboration and Institutional Support

Effective conservation of the Lesser Florican requires strong and sustained coordination with government agencies, particularly because the species predominantly breeds outside formally protected areas. The Bombay Natural History Society (BNHS) has obtained official approval from the Chief Wildlife Warden (CWLW) of Rajasthan to undertake scientific monitoring, habitat assessment, and conservation interventions across the Ajmer district. This authorisation facilitates systematic field surveys, deployment of trained field personnel, and direct collaboration with both territorial and wildlife wings of the Forest Department.

In parallel, a Memorandum of Understanding (MoU) between BNHS and the Rajasthan State Biodiversity Board (RSBB) is currently under development. The proposed MoU seeks to formalise long-term institutional cooperation, promote conservation planning beyond protected-area boundaries, and strengthen knowledge exchange between scientific institutions and state agencies.

Within this broader institutional framework, the agro-pastoral landscape of Shokliya and its surrounding regions in Rajasthan has emerged as a strong candidate for declaration as a Biodiversity Heritage Site (BHS). This landscape not only supports critical breeding and habitat requirements of the Lesser Florican but also represents a traditional land-use system where biodiversity has been sustained through community-managed practices. BNHS is presently engaged in detailed ecological studies, landscape-level assessments, and stakeholder consultations in this region, and is in the process of preparing formal proposals for the identification and notification of potential BHS sites.

For a species such as the Lesser Florican—highly dependent on community-managed agro-pastoral lands, revenue grasslands, and semi-natural fallows—such institutional partnerships and policy-driven initiatives are essential to ensure the long-term persistence of viable populations beyond the boundaries of conventional protected areas.

Bombay Natural History Society Lesser Florican Project team

Principle head

Dr Sujit Narwade, PhD, Deputy Director, BNHS

BNHS Team Members

- Dr Neelkanth Bora, Assistant Director
- Rushikesh Pawar, Senior Project Fellow
- Arindam Sinha, Senior Project Fellow
- Sanchi Shrivastav, Junior Project Fellow
- Sachin Bishnoi, Community Engagement Officer
- Pankaj Bishnoi, Community Engagement Officer
- Rajesh Parmar, Driver/ Field assistant
- Minal Pawar, Intern

Local resource team March 2025 - August 2025

बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी परियोजना दल

प्रधान प्रमुख

डॉ. सुजित नरवडे, पीएच.डी. उप निदेशक

बीएनएचएस टीम के सदस्य

- डॉ. नीलकंठ बोड़ा, सहायक निदेशक
- ऋषिकेश पवार, वरिष्ठ परियोजना सहकारी
- अरिंदम सिन्हा, वरिष्ठ परियोजना सहकारी
- साँची श्रीवास्तव, कनिष्ठ परियोजना सहकारी
- सचिन बिश्रोई, सामुदायिक सहभागिता अधिकारी
- पंकज बिश्रोई, सामुदायिक सहभागिता अधिकारी
- राजेश परमार, क्षेत्र सहायक
- मिनल पवार, प्रशिक्षु

स्थानीय संसाधन दल मार्च 2025 - अगस्त 2025



User Forum

Different facilities for users on <https://eiacp.moef.gov.in/drc/eiacp/centre/BNHS> website are as follows:

- More than 65,000 bibliographical references on Indian birds.
- Access to informative databases developed by the Centre. Databases include Endemic birds of India, Threatened birds of India, Important Bird Areas (IBAs), Marine birds of India, and others.
- List of other EIACP Centres on various subject areas for navigating through information on different subjects related to the environment.
- Link to the websites and journals pertaining to Avian Ecology.
- Kid's Centre, aimed towards school-going children, provides interesting facts on birds.
- All issues of Buceros, the Centre's newsletter, can be downloaded in PDF format.
- Informative PowerPoint presentations on birds are available for download.
- The glossary has more than 300 ornithological terms explained.
- Contacts of eminent experts in ornithological studies.

Request for Articles and Literature

Dear Readers,

1) You are welcome to contribute articles and photographs pertaining to avian ecology, to our newsletter. Kindly email your submissions to buceros@bnhs.org.

2) To strengthen our databases we would request you to send us literature, which is not available on our website.

Feedback and Queries

You can send your feedback pertaining to our website and Buceros newsletter via email or through our website. Any queries related to avian ecology can also be sent to eiacp@bnhs.org or bnhs-env@nic.in

उपयोगकर्ता फोरम

<https://eiacp.moef.gov.in/drc/eiacp/centre/BNHS> वेबसाइट पर उपयोगकर्ताओं के लिए विभिन्न सुविधाएं इस प्रकार हैं:

- भारतीय पक्षियों पर ६५,००० से अधिक ग्रंथ सूची संबंधी संदर्भ।
- भारत के स्थानिक पक्षी, भारत के संकटग्रस्त पक्षी, महत्वपूर्ण पक्षी क्षेत्र (आईबीए), भारत के समुद्री पक्षी, और अन्य जानकारी केंद्र द्वारा विकसित सूचनात्मक डेटाबेस में शामिल है।
- पर्यावरण से संबंधित विभिन्न विषयों पर कार्यरत ईआईएसीपी केंद्र की सूची उपलब्ध है।
- पक्षी पारिस्थितिकी से संबंधित वेबसाइट और पत्रिकाओं से लिंक उपलब्ध है।
- पाठशाला जाने वाले बच्चों के उद्देश्य से किड्स सेंटर पक्षियों संबंधित रोचक तथ्य प्रदान करता है।
- BUCEROS के सभी अंक, केंद्र के समाचार पत्र, पीडीएफ प्रारूप में अवचयन किए जा सकते हैं।
- पक्षी पारिस्थितिकी से संबंधित पावरपॉइंट प्रस्तुतीकरण अवचयन के लिए उपलब्ध है।
- शब्दावली में 300 से अधिक पक्षीविज्ञान संबंधी शब्दों की व्याख्या उपलब्ध है।
- पक्षीविज्ञान संबंधी अध्ययन के प्रख्यात विशेषज्ञों के संपर्क उपलब्ध है।

लेख और साहित्य के लिए अनुरोध

प्रिय पाठक,

1) आप पक्षी पारिस्थितिकी से संबंधित लेख और तस्वीरें हमारे Buceros समाचार पत्रिका के लिए भेज सकते हैं। कृपया अपने लेख और तस्वीरें buceros@bnhs.org पर ईमेल करें।

2) हमारे डेटाबेस को मजबूत बनाने के लिए, हम आपसे अनुरोध करते हैं कि आप हमें ऐसा साहित्य भेजें जो हमारी वेबसाइट पर उपलब्ध नहीं है।

प्रतिक्रिया और प्रश्न

आप हमारी वेबसाइट और BUCEROS न्यूजलेटर से संबंधित अपनी प्रतिक्रिया ईमेल या हमारी वेबसाइट के माध्यम से भेज सकते हैं। पक्षी पारिस्थितिकी से संबंधित किसी भी प्रश्न को आप eiacp@bnhs.org या bnhs-env@nic.in पर भेज सकते हैं।

घास के मैदान बचाओ! खरमोर बचाओ!

Save Grasslands ! Save Florican!

